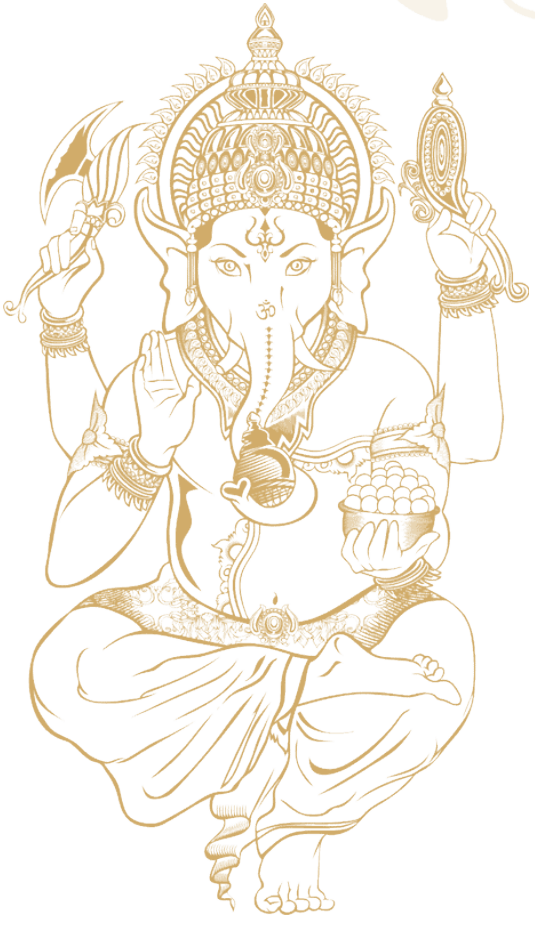

DHEERAJ SHARMA

TITIKSHA SHARMA

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121491809

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
17/10/1999 :	जन्म तिथि	: 25/05/2002
रविवार :	दिन	: शनिवार
घंटे 12:15:00 :	जन्म समय	: 21:20:00 घंटे
घटी 15:12:43 :	जन्म समय(घटी)	: 39:04:28 घटी
India :	देश	: India
Hyderabad :	स्थान	: Hyderabad
17:22:00 उत्तर :	अक्षांश	: 17:22:00 उत्तर
78:26:00 पूर्व :	रेखांश	: 78:26:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:16:16 :	स्थानिक संस्कार	: -00:16:16 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
06:09:54 :	सूर्योदय	: 05:42:12
17:53:28 :	सूर्यास्त	: 18:44:20
23:51:00 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:53:08

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 1वर्ष 3मा 12दि		22:22:04	धनु	लग्न	धनु	16:32:53	गुरु 4वर्ष 10मा 27दि	
राहु		29:36:11	कन्या	सूर्य	वृष	10:22:23	शनि	
28/01/2024		25:48:41	धनु	चंद्र	तुला	29:14:33	22/04/2007	
28/01/2042		06:18:19	धनु	मंगल	मिथु	04:14:58	22/04/2026	
राहु	11/10/2026	22:38:11	तुला	बुध व	वृष	12:51:56	शनि	25/04/2010
गुरु	05/03/2029	06:57:13	मेष व	गुरु	मिथु	21:26:04	बुध	02/01/2013
शनि	10/01/2032	13:52:46	सिंह	शुक्र	मिथु	12:13:01	केतु	11/02/2014
बुध	30/07/2034	21:25:39	मेष व	शनि	वृष	22:39:12	शुक्र	13/04/2017
केतु	17/08/2035	15:57:30	कर्क व	राहु व	वृष	23:57:04	सूर्य	26/03/2018
शुक्र	17/08/2038	15:57:30	मक व	केतु व	वृश्चि	23:57:04	चन्द्र	25/10/2019
सूर्य	12/07/2039	19:01:38	मक व	हर्ष	कुंभ	04:55:17	मंगल	03/12/2020
चन्द्र	09/01/2041	07:44:25	मक	नेप व	मक	17:03:20	राहु	10/10/2023
मंगल	28/01/2042	14:49:07	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	22:43:24	गुरु	22/04/2026

लग्न-चलित

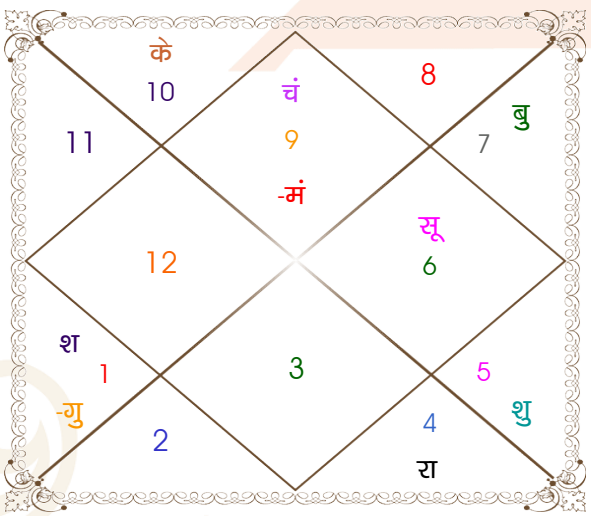

लग्न-चलित

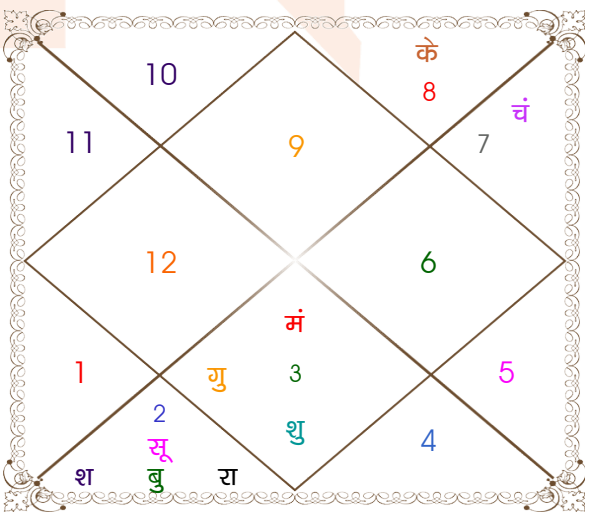

Pandit Chidamber Mishra

9246159232

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	वानर	व्याघ्र	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	शुक्र	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	धनु	तुला	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	20.00		

गणदोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता नहीं है।

क्भ्म्म्त्।श्रै भ।त्ड। का वर्ग श्वान है तथा ज्प्ज्ञैभ।ै भ।त्ड। का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार क्भ्म्म्त्।श्रै भ।त्ड। और ज्प्ज्ञैभ।ै भ।त्ड। का मिलान औसत है।

मंगलीक दोष मिलान

क्भ्म्म्त्।श्रै भ।त्ड। मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र क्भ्म्म्त्।श्रै भ।त्ड। कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

ज्प्ज्ञैभ।ै भ।त्ड। मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु ज्ज्ष्ठैभ। ैभ।त्ड। कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु ज्ज्ष्ठैभ। ैभ।त्ड। कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

वभ्म्त।श्रै भ।त्ड। तथा ज्ज्ष्ठैभ। ैभ।त्ड। में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।